सामने मानवता और मानवीयता का संदेश देने वाला विचार करते हैं। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद शास्त्र, जीवन-मूल्यों, जीवनशैली के आधार पर किया गया है। इसलिए हम 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' कहते हैं। जिसका भाव है कि विश्व का कल्याण हो। इसे ही सांस्कृतिक राष्ट्रवाद कहा जाता है।

पूज्यनीय गुरूजी ने राजनैतिक राष्ट्रवाद की भी बात कही थी। राजनैतिक राष्ट्रवाद विस्तारवाद का संदेश देता है। साम्राज्य की विस्तार की कल्पना करता है। युवकों को निमंत्रण देकर आक्रामक बनाता है। इसकी सोच अपनी सीमा को बढ़ाने की होती है। दुनिया के छोटे देशों को अपने प्रभावों में लाने की कोशिश कराता है। इसलिए राष्ट्रवाद का विचार करते समय भारतीय लोग सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के समर्थक हुए। ज़्योंकि इसमें सकारात्मक है जबकि राजनैतिक राष्ट्रवाद में नकारात्मक है। इटली के मैजिनी ने कुछ सूत्र लिखे हैं। उसमें एक सूत्र कहता है कि समूह जन शज़्द का प्रयोग है। प्रत्येक समूह का अपने जीवन का लक्ष्य होता है। वह लक्ष्य मानवीयता का पोषण करने वाला होता है। पोषण करने की जो प्रवृति है वह उस समूह की राष्ट्रीयता मानी जाती है। मैजिनी ने अपनी कल्पनाओं को बहुत ही स्पष्ट किया है। लेकिन, दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि इटली में फासीवाद का जन्म हुआ। जिसमें नकारात्मक राष्ट्रवाद को स्वीकारते हुए पूरे विश्व के सामने समस्या पैदा कर दी। कभी-कभी लोग संघ को भी फासीवादी कहते हैं। वे ज़्यों कहते हैं, मुझे अभी तक पता नहीं है। कभी-कभी विचार आता है कि प्रमाणिकता से विचार करने वाले मैजिनी और हमारे ऋषि-मुनियों ने जो राष्ट्रवाद की कल्पना की उसमें ज़्या अन्तर है? वह एक ही भाव प्रकट कर रहा है। इसलिए जब भी सकारात्मक विचार कहीं होता है तो वह भारत के विचारों के साथ मेल खाता है। अज़्सर कहा जाता है कि राष्ट्रवाद ज़्या है? दरअसल राष्ट्रवाद एक सार तत्व और आध्यात्मिक है। विश्व कल्याण और मानव कल्याण की बात करने वाले हैं। यह कहा गया है कि समृद्ध और श्रेष्ठ परज़्पराओं को दुनिया में बांटना राष्ट्रवाद का आध्यात्मिक सार है। सकारात्मक वातावरण को स्थापित करने के लिए हम जियेंगे। इसलिए हम कहते हैं कि मृत्युंजय भारत। मृत्युंजय भारत ज़्या होता है? मृत्युंजय भारत का अर्थ है, दुनिया को सही दिशा देने वाला। इसका वर्णन कई तरह से किया गया है। अगर हम ईसाईयत और इस्लाम के सन्दर्भ में देखते हैं तो उनका मानना है कि सारे विश्व में अगर ईसाइयत स्थापित हो जाती है तो राष्ट्र कल्पना समाप्त हो जाएगी। इसके बाद राष्ट्र कल्पना नहीं रहेगी। ज़्योंकि सभी एक ही तत्व को मानने वाले हो जायेंगे। इस्लाम ने भी यही कहा है और ईसाई और इस्लाम ने इस राष्ट्र की कल्पना को नष्ट करने का प्रयास किया। परन्तु जो स्वाभाविक होता है वह कभी समाप्त नहीं होता। कई छोटे-छोटे इस्लामिक देश बनें। इसके साथ कज़्युनिज़्म के द्वारा तीसरा प्रयत्न हुआ। कज़्युनिज़्म ने कहा सारा विश्व एक है।

उनका मत था कि दुनिया में दो प्रकार के लोग हैं। एक शोषित हैं और एक शोषक है। आज हम देखते हैं कि ही कज़्युनिज़्म बंट गया है। चीन,रूस और भारत में अलग-अलग कज़्युनिज़्म है। ये टुकड़े-टुकड़े होते गए। यह होना ही था ज़्योंकि प्रकृति भिन्न थी, विचार भिन्न थे, जीवनशैली में भिन्नता थी। हम अनुभव करते हैं कि जिन्होंने राष्ट्रवाद की कल्पना को समाप्त करने की कोशिश की वह सब विफल